Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / March-April 2025 / VOL -01 ISSUE-V

13

हिंदी यात्रा साहित्य में हिंदू धर्म

डॉ. विक्रम रामचंद्र पवार
सहायक प्राध्यापक
देशभक्त संभाजीराव गरड महाविद्यालय– मोहोळ.

.....

प्रस्तावना–'धर्म' शब्द का वास्तविक अर्थ है 'धारण करना'। जैसे हम वस्त्र धारण करते हैं, वैसे ही किसी विचार–धारा, साधना पद्धति का अंगीकार करना ही 'धर्म' की व्याख्या को रूपायित करता है। ईश्वरीय सत्ता में विश्वास करने की भावना धर्म का उद्गम स्थल मानी जा सकती है। मानव अज्ञात, अनादि, अगोचर ईश्वर की अनंत शक्ति को धर्म की परिधि में संयोजित कर नियम, विधिनिषेध आदि स्वीकार करता है। यह उसकी धर्माचरण पद्धति कही जा सकती है। इस प्रकार धर्म मानव के व्यवस्थित जीवन का मार्ग प्रशस्त करता है तथा उसमें अलौकिक शक्ति के प्रति विश्वास जगाता है। उत्तरशती के यात्रा–साहित्य में विभिन्न धर्मों की आचार–विचार पद्धति, धार्मिक स्थल आदि का यथार्थ परिचय मिलता है। परंतु इसमें हिंदू धर्म के विभिन्न विधि–विधानों का ही अधिक वर्णन मिलता है। बाकी धर्मों का पूर्ण विस्तार के साथ परिचय नहीं मिलता।

हिंदू धर्म :–भारत धर्मप्राण देश है। यहाँ विविध धर्मों के लोग निवास करते हैं, परंतु संख्या तथा प्राचीन परंपरा की दृष्टि से हिंदू धर्म ही यहाँ का प्रमुख धर्म है। विभिन्न देवी–देवता, पूजा–पाठ, मंदिर–आश्रम, तीर्थ, व्रत, उपवास आदि तत्व या उपकरण हिंदू–धर्म की संकल्पना को अभिव्यक्त करते हैं। अत: हिंदू–धर्म को समझने के लिए इन तत्वों को जानना नितांत आवश्यक है।

देवी–देवता/मंदिर/तीर्थ :

हिंदू–धर्म में देवी–देवताओं की संख्या लाखों में पाई जाती है। लगभग प्रत्येक ग्राम में एक विशिष्ट ग्रामदेवता अवश्य होता है–"कुल्लू घाटी के लगभग सभी गाँवों में अलग–अलग देवों के स्थानक हैं। इन देवों के नाम तथा आकार प्रकार पर अलग ही अनुसंधान करने जैसा है। प्रत्येक गाँव अपने–अपने देव की उपासना करता है। वर्ष में एक बार सभी देवों को (लगभग दो सौ से अधिक) दशहरे के दिनों में यहाँ कुल्लूनगर में धूमधड़ाके के साथ रघुनाथजी की सभा में लाया जाता है। मनाली की सर्वोच्च देवी हिडिंबा है। जब तक हिडिंबा (भीम की पत्नी) नहीं आती तब तक सभा शुरू नहीं होती। समस्त भारत में हिडिंबा का भले ही कोई स्थान न हो किंतु यहाँ वह मुख्य देवी है।" अत: भारत भर में भिन्न–भिन्न रूप–आकार एवं मान्यताओं का ग्रहण कर देवी–देवता तथा मंदिरों का निर्माण हुआ है।

विश्वकर्मा कारीगरों का ईश्वर है–"कौशल्य बढ़ाने में मदद करनेवाले, तरह–तरह के औजार बनानेवाले कुम्हार, राज, बढ़ई, लोहार, सोनार आदि कारीगरों का वह देव है। संस्कृत में विश्वकर्मा–महात्म्य के नाम के ग्रंथ भी पाए जाते हैं। इसी वैदिक देव ने इंद्र के लिए वज्र बनाया। विष्णु के लिए सुदर्शन, शंकर के लिए त्रिशुल। इसी ने श्रीकृष्ण के लिए द्वारिका बसाई और वृंदावन भी तैयार कर दिया, इंद्र के लिए लंका बनाई, त्रिपुरासुर के नाश के लिए इंद्र का रथ बनाया। दधीचि की हड्डियों का वज्र बनाया। विश्वकर्मा ने यज्ञ के समय ब्रह्मदेव का मुंडन भी किया इसलिए यह नाइयों का भी देव है। उसने माली, कसेरा, दर्जी, संगतराश (पत्थरकट), छीपी जैसे अनेक कारीगर तैयार किए। विश्वकर्मा के नाम घर बनाने का एक शास्त्र भी मौजूद है।"

भारतीय जन–मन की ईश्वर में गहरी आस्था है। देशभर में बने लाखों मंदिर इसका प्रमाण है। द्वारिकाधिश मंदिर के "विराट प्रवेशद्वार में घुसकर क्रमश: चलते हुए सभा–मंडप में पहुँचते हैं। बाईं ओर अनेक छोटे–छोटे मंदिर हैं और अंत में वह सभा–मंडप है, जिसमें भगवान द्वारिकाधीश विराजते हैं। सभा–मंडप बहुत बड़ा नहीं है। उसमें चार–पाँच सौ व्यक्ति ही मुश्किल से खड़े हो सकते हैं। सामने गर्भ–गृह में भगवान कृष्ण और रुक्मिणी जी की मूर्तियाँ हैं जो रंगीन पोशाकों और आभूषणों से सज्जित रहती हैं।.....वर्तमान मंदिर महमूद गजनवी के आक्रमणों के बाद बनाया गया है। इस स्थान पर सबसे पहला मंदिर श्रीकृष्ण के पौत्र महाराज वज्र ने बनवाया था, ऐसा उल्लेख है। मंदिर टूटता रहा और पुन: पुन: निर्मित होता रहा, लेकिन भारतीय आस्था का स्तंभ अडिग रूप से निष्कंप खड़ा रहा।" यहाँ पर मंदिरों के प्रति भारतीयों की श्रद्धा–भक्ति का स्पष्ट चित्र उपस्थित हुआ है।

हिंदू धर्म में तीर्थ यात्राओं का विशेष महत्व है। चार–धाम यात्रा, वैष्णवदेवी यात्रा आदि तीर्थ यात्राएँ हिंदू–धर्म की ईश्वर भक्ति एवं धर्माचरण पद्धति का अनिवार्य अंग है। वैष्णवदेवी यात्रा कटरा से प्रारंभ होती है। इसके उपरांत दर्शनी दरवाजा, बाणगंगा, चरण पादुका, गर्भ जुन गुफा, हाथी माथा आदि पाड़ाव पार कर यात्री वैष्णवी माँ के दरबार में पहुँचता है–"शक्ति वैष्णवी का दरबार भैरव मंदिर से लगभग ढ़ाई किलोमीटर दूर है। गुफा लगभग १८ मीटर लंबी है। जिसमें तीन रम्य पिंडियाँ हैं। गुफा में चरण गंगा का सुशीतल जल प्रवाहित होता है। गुफा के द्वार पर पड़ा विशाल पाषाण–खंड भैरों (भैरव) के धड़ का प्रतीक माना जाता है। गुफा के अंत में महालक्ष्मी, सरस्वती तथा महाकाली की तीन रम्य पिंडियाँ हैं। इन तीनों में अधिक भव्य मध्य वाली को भगवती वैष्णव देवी की पिंडी माना जाता है। यहाँ कठिनाई से ४–५ व्यक्तियों के बैठने लायक स्थान है।.....वैष्णव देवी की यात्रा भी संकटपूर्ण किंतु आनंददायी है। विभिन्न समुदायों, वर्गों और जातियों एवं उपजातियों के लोग यहाँ आकर एकाकार हो जाते हैं।

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / March-April 2025 / VOL -01 ISSUE-V

सारे भेद–भाव मिट जाते हैं। यहीं वस्तुत: सच्ची राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक एकता के दर्शन होते हैं।" यहाँ पर तीर्थ–यात्राओं के माध्यम से उत्पन्न एकता की भावना को अभिव्यक्त किया गया है।

पूजा–पाठ/विधि–विधान : मंदिर ईश्वर भक्ति, आराधना के प्रमुख केंद्र होते हैं। पूजा–अर्चना के समय ईश्वर आरती का अत्यंत महत्व होता है। आरती के माध्यम से भगवान के गुणों को अभिव्यक्त किया जाता है। ईश्वर आरती की महत्ता पर विचार करते हुए श्री मक्खनलाल शर्मा जी लिखते हैं–"वेदव्यास को 'यतो कृष्ण ततो जय' की उद्घोषणा करनी पड़ी थी। ऐसे पुराणपुरुष योगेश्वर की आरती! अपूर्व दृश्य है! कृष्ण की आरती का साथी होने का अर्थ मेरे लिए तो है 'स्व' को सनातन सौंदर्य के प्रकाश–प्रवाह में प्रवाहित कर देना। आत्मसमर्पण! सर्वस्व समर्पण!!.....महाभारत के बाद भी जब उसने देखा कि क्रोध, हिंसा, अहंकार और शोषण के अनेक केंद्र उनके अपने परिजनों और स्वगोत्रियों में ही बच गए हैं, तो उन्हें प्रभास–क्षेत्र में परस्पर लड़वाकर मरवाया। आततायी यदि स्वगोत्री है, अपना परिजन अथवा पुत्र है, तब भी उसका विरोध करना है, नाश करना या कराना है। तभी होगी भगवान की आरती सार्थक! हमारा जीवन ही आरती है जो भगवान के मंदिर में भगवान के विग्रह के समक्ष प्रज्वलित है। इसे दिन–रात जलकर इस मंदिर को इस जगत को प्रकाशित करते रहना है।" यहाँ भगवत आरती की सार्थक व्याख्या प्रस्तुत की गई है।

हिंदू–धर्म में गंगा को ईश्वर सम पूजा जाता है–"हरिद्वार में गंगा आरती, काशी में प्रतिदिन गंगा पूजन होता है। कोजागरी अर्थात कार्तिक पूर्णिमा के दिन ऊँचे बाँसों में ताड़पत्र की टोकरी में दीप जलाए जाते हैं, ये दश दीपक गंगा में कुश की चटाई पर रखकर लोग प्रतिदिन प्रवाहित करते हैं। गंगा का पूरा वक्षस्थल जगमगा उठता है। कुँआरी कन्याएँ तो कभी–कभी सूखे पत्तों पर नन्हें दीपक में चौतरफा बत्तियाँ जलाकर प्रवाहित करती हैं, लगता है गंगा की लहरों में नक्षत्र तैर रहे हों। कितना अद्भुत मनभावन दृश्य होता है।"

हिंदू–धर्म में जन्म से लेकर मृत्यु तक व्यक्ति से संबद्ध विविध विधि–विधानों का प्रयोजन है। मरणासन्न व्यक्ति के प्रति कृतज्ञता पूर्वक विधि–विधान संपन्न किए जाते हैं–"भारत में ऐसा पका पत्ता मरणशैया पर पड़ा हो तो सारा परिवार उसके चारों ओर इकट्ठा हो जाता है। गायों के लिए घास, कुत्तों के लिए गुड़ की बर्फी, मंदिर में दान न जाने कितने–कितने दान किए जाते हैं–घी का दीपक, तुलसी का पत्ता, गंगाजल, गीता का पाठ, कान में राम का नाम अर्थात् मनुष्य को मरना भी अच्छा लगे ऐसा वातावरण बन जाता है। चारों ओर भावना के ताने–बाने से बुना हुआ वातावरण हो और मरने के बाद भी उसकी सद्गति के लिए किसी पवित्र नदी में फूल विसर्जन करना, पिंडदान करना, भोज देना और प्रति वर्ष निश्चित तिथि को श्राद्ध करना।" भारतीय धर्माचरण पद्धति के सतपक्ष पर यहाँ प्रकाश डाला गया है।

अंधविश्वास :प्राचीन काल से भारतीयों का सामाजिक जीवन रुढ़ि, प्रथा–परंपरा, लोकविश्वास आदि से प्रभावित रहा है। वास्तव में आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए व्यक्ति कुछ कार्य पद्धतियों को अपनाता है, जो उसकी आदत बन जाती है। कालांतर में यह आदत समाज में रुढ़ होकर रीति बन जाती है और धीरे–धीरे परंपरा का रूप धारण कर लेती है। इन परंपराओं का पालन करना मनुष्य अपना धर्म समझने लगता है। किसी कारणवश आई हुई आपत्तियों एवं प्राकृतिक आदि विपत्तियों को वह परंपराओं की पालनहीनता समझकर भिन्न–भिन्न प्रकार के विधि–विधान प्रयुक्त करता है। यह उसकी अंधश्रद्धा कहलाती है। भारतीय समाज में प्रचलित विभिन्न प्रथा–परंपरा, अंधविश्वास आदि का सटीक वर्णन उत्तरशती के यात्रा–साहित्य में यथार्थ रूप में मिलता है।

भारत में प्रचलित अधिकांश प्रथा–परंपराएँ धर्म से जुड़ी हुई हैं, जिनमें अंधश्रद्धा का योग सर्वोपरी है। भारत में आज भी देवी–देवताओं को पशुओं की बलि चढ़ाने की प्रथा कई स्थानों पर प्रचलित है। हिमाचल प्रदेश के भीमाकाली माता के मंदिर में आज भी यह प्रथा निभाई जाती है–"माताजी को यहाँ प्रतिदिन बकरे की बलि देने में आती है तथा ब्राह्मण पुजारियों सहित सभी प्रसाद लेते हैं। बहुत बार मनौती माने हुए बकरों की भी बलि दी जाती है। बलि दिए बकरे का कौन–सा अंग किसे लेना यह पहले से ही तय होता है। शिवरात्रि के दिन तो कोई गरीब घर हो तो भी एकाध बकरा तो अपने बाल–बच्चों के लिए नैवेद्य करता ही है।"

तमिलनाडु के बेल्लोर में काजल से टीकी हुई हँडियों को घर आदि पर लगाने का अंधविश्वास प्रचलित है–"कहते हैं कि बनते मकान पर, पकी फसल पर, शुभकार्य के लिए सजे–सजाए मकान की ऊपरी छत पर काजल और चूने से टीकी ऐसी हँडियाँ लटकाने से नजर नहीं लगती।"

प्रथा–परंपराओं का अतिरेकी निर्वाह ही अंधश्रद्धा का निर्माता होता है। तीर्थ–स्थलों पर पवित्र नदियों में स्नान करने का आम रिवाज है। परंतु बद्रीनाथ जैसे स्थानों पर बर्फीले पानी में स्नान करना तो केवल अंधश्रद्धा ही कही जा सकती है। श्री कन्हैयालाल नंदन जी के शब्दों में–"मंदिर से उतरकर अलकनंदा के ठीक बीचोबीच पुल पर खड़े होकर जब मैंने देखा कि बर्फीले जल में लोग नहा रहे हैं और न केवल खुद नहा रहे हैं, अपने नन्हें बच्चों को भी नहला रहे हैं, तो मुझे लगा कि अंधआस्था बच्चों के स्वास्थ की भी परवाह नहीं करती।..... वे सर्दी के इलाज के लिए डॉक्टर के पास गए थे और डॉक्टर साहब उन्हें समझा रहे थे कि मैंने इंजेक्शन तो लगा दिया है, लेकिन आप कुछ मजबूत कपड़े तो पहनिए। उनका उत्तर था–"बद्रीनाथ जी सब सँभाल लेंगे,

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / March-April 2025 / VOL -01 ISSUE-V

वे दीनानाथ हैं।" डॉक्टर साहब समझाते–समझाते हार रहे थे कि बद्रीनाथ जी दीनानाथ हैं, लेकिन कपड़े तो आपको ही पहनने पड़ेंगे, बद्रीनाथ जी कपड़े कहाँ से दे देंगे?" अंधश्रद्धा मानव की सद्सद विवेक बुद्धि को भी ग्रस्त कर देती है।

आज कल पूजा–पाठ के नाम पर जनता को विभिन्न प्रकार से लूटा जा रहा है। "तुलसी और दूध मिला हुआ जल भगवान के चरणों के नीचे ढाला जा रहा है और साथ ही साथ मंत्रोच्चार हो रहा है। जब जल ढ़ल गया तो जो थोड़ा–सा शेष रह गया उसे चरणामृत के रूप में भक्तों को दिया जा रहा है। भक्त लोग चुल्लुओं में ले रहे हैं। पुजारियों के हाथ में आरती के थाल हैं, भक्त आरती ले रहे हैं और पैसे डाल रहे हैं। जो पैसा नहीं डालते उन्हें अपने कर्तव्य की याद दिलाने के लिए पुजारी पैसे डालने को कहते हैं।

'कम–से–कम एक रूपया तो चढ़ाइए' बार–बार दुहराया जा रहा है। तीन–चार पुजारियों के हाथों में बाँस की फटी खपच्चियाँ हैं जिन्हें वे दर्शनार्थियों की पीठ पर मार रहे हैं। यह भगवान का आशीर्वाद है, जिसके बदले में भक्तों को भी पैसों का त्याग करना है, अन्यथा नरक से मुक्ति नहीं होंगी–यह स्मरण दिलाया जा रहा है। धन्य है भगवान का दरबार!" यहाँ पुजारियों की लूट–खसोर वृत्ति पर व्यंग्य किया गया है।

बस्तर के आदिवासियों में घोटुल परंपरा प्रचलित है–"घोटुल यानी कुमार कुमारियों का रात्रिकालीन मिलन–स्थल। अंग्रेजी में जिसे 'यूथ क्लब' कहा जा सकता है। बस्तर की चर्चा छिड़ते ही घोटुल का जिक्र जरूर आता है। शाम को घोटुल में गाँव के लड़के–लड़कियाँ आते हैं। नाचते–गाते हैं और फिर वहीं सो जाते हैं। पर नैतिकता इतनी कि घोटुल में कोई किसी के साथ शारीरिक संबंध स्थापित नहीं करता। हाँ एक–दूसरे को पसंद करने, एक–दूसरे को जानने–समझने की शुरूआत यहीं से होती है। फिर एक दिन आदिवासी युवक अपनी 'प्रिया' को लेकर यहाँ से भाग निकलता है और इसके बाद गाँव वाले धूमधाम से दोनों का विवाह रचा देते हैं। अद्भुत है यह घोटुल–परंपरा। चकित करती है यहाँ की नैतिकता।" कुछ प्रथाएँ मानव हित रक्षण का कार्य भी संपन्न करती हैं।

निष्कर्ष–उत्तरशती के यात्राकारों ने भारतीयों की देवी–देवता तथा मंदिर आदि के प्रति की आस्था का मार्मिक चित्र उपस्थित किया है। तीर्थ यात्राओं को राष्ट्रीय एकता के प्रतीक रूप में प्रस्तुत करना उनकी विशिष्ट सूझ का प्रतिफलन कहा जा सकता है। इस प्रकार उत्तरशती के यात्रा–साहित्य में भारत के विविध प्रांतों में प्रचलित प्रथा–परंपरा एवं अंधविश्वास का मार्मिक अंकन हुआ है। इससे प्रदेश विशेष के समाज–जीवन पर प्रकाश डाला गया है, वहीं प्रचलित आडंबरों का मुखर विरोध भी किया गया है। इस प्रकार उत्तरशती के यात्राकारों ने पूजा–पाठ की विभिन्न पद्धतियों, पूजारियों की स्वार्थी प्रवृत्ति एवं विधि–विधानों के सत् पक्ष को यथार्थ रूप में अभिव्यक्त किया है।

संदर्भ सूची–

हिमालय के प्रांगण में	स्वामी सच्चिदानंद
प्रकृति का संगीत	काका कालेलकर
दो कदम मेरे साथ भी	मक्खनलाल शर्मा
देवगिरि से हिमगिरि तक	भरतराम भट्ट
साब्जा पत्र कथा कहे	शिवप्रसाद सिंह
विदेश यात्रा के प्रेरक प्रसंग	स्वामी सच्चिदानंद